जनपद — (द्वितीय नगरीकरण)

जनपद के निर्माण की परिस्थितियाँ –

(1) पूर्वी उ०प्र० और प० बिहार में लौह का व्यापक प्रयोग।

→ (i) लौहास्त्रों के कारण योद्धा वर्ग की बढ़ती भूमिका

(ii) लौह कृषि उपकरणों के फलस्वरूप अधिशेष उत्पादन

(iii) अधिशेष उत्पादन ने सैन्य और कुशासन के लिए पृष्ठभूमि तैयार की

(iv) शासक की जरूरतें भी अधिशेष अनाज के द्वारा पूरी की जा सकती थीं।

(v) राज्य विस्तार नीति

(vi) लोगों की निष्ठा जो जन या कबीले से थी अब धीरे-धीरे जनपद से जुड़ने लगी।

महाजनपद के अध्ययन के महत्वपूर्ण स्रोत :-

(1) वैदिक साहित्य
(2) ब्राह्मण
(3) उपनिषद
(4) बौद्ध साहित्य में 16 महाजनपदों का उल्लेख

] साहित्यिक स्रोत

(5) उत्खनन क्षेत्रों से लौह अवशेष
(6) गंगा के मैदान में तांबे की कमी व वस्तुओं के ढेर और मृद्भांड के नमूने

] पुरातात्विक स्रोत

16 महाजनपद

अधिकतर राज्य के विन्ध्य के उत्तर में और पश्चिमोत्तर सीमा अंत से बिहार तक फैले थे।

शक्तिशाली जनपद – मगध, कोशल, वत्स तथा अवन्ति

(1) अंग – चंपा
(2) मगध – गिरिव्रज (राजगीर)
(3) वज्जि – वैशाली – इसके अंतर्गत 8 गणराज्य थे। महत्वपूर्ण "गणराज्य" – कुण्डग्राम
(4) काशी – वाराणसी
(5) कौसल – श्रावस्ती – इसके अंतर्गत "गणराज्य" – कपिलवस्तु (पू० उ० प्र०)
(6) मल्ल – [कुशीनारा, पावा] – "गणराज्य"
(7) वत्स – कौशाम्बी
(8) पंचाल (प० उ० प्र०) – [अहिच्छत्र, काम्पिल्य]
(9) कुरु (प० उ० प्र०) – इंद्रप्रस्थ
(10) अवन्ति – [उज्जैन, माहिष्मती]
(11) शूरसेन – मथुरा
(12) मत्स्य (राजस्थान के पास) – विराटनगर
(13) गंधार – तक्षशिला
(14) अश्मक (गोदावरी के समीप) – पोतना
(15) चेदि (बुंदेलखंड) –
(16) कम्बोज (अफगानिस्तान)

जनपदों में प्रतिद्वंद्विता के कारण — गंगा-यमुना का मैदान जो आर्थिक रूप से संपन्न था।
(मगध और कोसल की प्रतिद्वंद्विता)

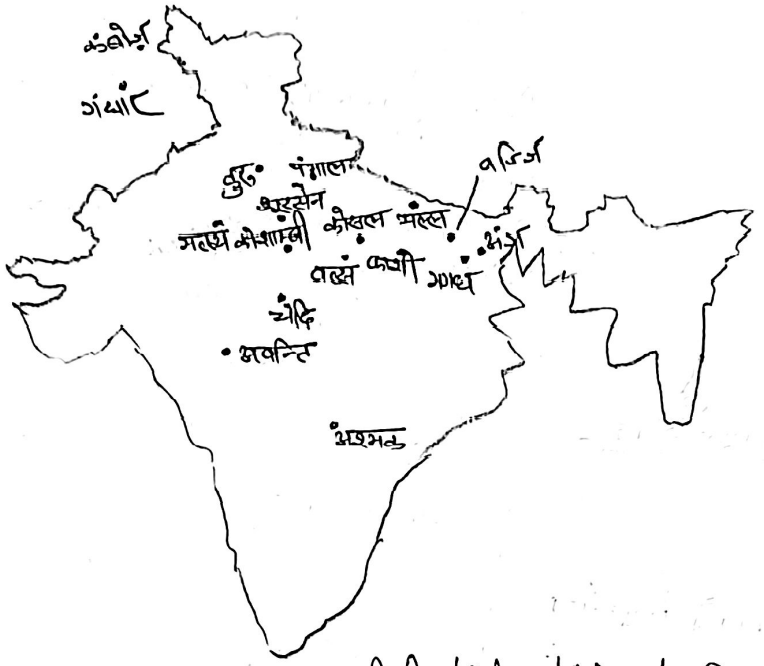

मगध जनपद — राजगीर / गिरिव्रज (पत्थर की दीवारों से चारों ओर से घिरा दुर्ग)
(हर्यक वंश)
बिंबिसार (बुद्ध के समकालीन) —
- अंग पर अधिकार
- वैवाहिक संबंध — कोसल की राजकुमारी, और लिच्छवी राजकुमारी
- अवन्ति के राजा प्रद्योत के लिए राजवैद्य भेजना

} विजय और कूटनीति

↓

अजातशत्रु —
- वैशाली लिच्छवियों के बीच फूट डालना
- विस्तार की आक्रामक नीति
- कोसल के साथ युद्ध में विजय, कोसल राजकुमारी से विवाह, काशी की
- काशी पर विजय
- पत्थर फेंकने वाला युद्ध यंत्र ; ऐसा रथ जिसमें गदा जैसा हथियार जुड़ा था

↓

उदयिन — पटना की स्थापना

(शिशुनाग वंश)

शिशुनाग — राजधानी वैशाली ले जाना
↓
कालाशोक

} महत्वपूर्ण उपलब्धि — अवन्ति की शक्ति को तोड़ना और इसका मगध साम्राज्य में मिलना

(नंद वंश)

महानंदिन
↓
महापद्म नंद (एकराट)
↓
धनानंद (सिकंदर का आक्रमण)

} महत्वपूर्ण उपलब्धि — (i) कलिंग पर विजय, कोसल पर विजय
(ii) इनकी शक्ति के कारण सिकंदर पूर्व की ओर नहीं बढ़ा
(iii) विशाल सेना और व्यवस्थित शासन प्रणाली
(iv) पाटलिपुत्र राजनीति के साथ-साथ शिक्षा और संस्कृति का भी केंद्र बना
(v) प्रभावी कर-संग्रह प्रणाली.

मगध की सफलता के कारण -

(1) बिंबिसार, अजातशत्रु, महापद्मनंद जैसे शक्तिशाली शासक

(2) राजनीति और युद्ध का सहारा जैसे वैवाहिक संबंधों की स्थापना।

(3) लौह भंडार की उपलब्धता —
- कृषि
- हथियार
- कृषि अधिशेष के कारण नगर

(4) मगध की दोनों राजधानियों का सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होना।

राजगीर — पांच पहाड़ियों से घिरा था

पाटलिपुत्र — गंगा, गंडक और सोन नदी के संगम पर अवस्थित (जलदुर्ग)

(5) गंगा का मैदान — उपजाऊ

(6) व्यापार-वाणिज्य की वृद्धि, सिक्के का प्रचलन, नगरों का उत्थान

↓ फलस्वरूप

वाणिज्य वस्तुओं पर चुंगी

(7) हाथियों का युद्ध में इस्तेमाल

(8) मगध समाज रूढ़िविरोधी था इस प्रदेश का आर्यीकरण हाल में हुआ था इसलिए पूर्वकाल से वैदिक प्रभाव में आए हुए राज्यों की अपेक्षा मगध में विस्तार के लिए उत्साह अधिक था।